अक्खड— (**आ + स्कन्द्**) आक्रमण करना।

अक्खुंब— १ चखकर छोड़ना। २ नखों से कुरेदना (निचू २ पृ १२४)।

अक्खोड (आ + स्फोटय्)—थोड़ा या एक बार झटकना (द ४ सू १९)।

अक्खोड (कृष्)—तलवार को म्यान में से खींचना (प्रा ४।१८८)।

अग्गुम (पृ)—पूरित करना।

अग्घ (अर्ह्)—प्राप्त होना (उ ६।४४)।

अग्घ (राज्)—शोभना, चमकना (प्रा ४।१००)।

अग्घव (पूर्)—पूरा करना (प्रा ४।१६९)।

अग्घाड (पूर्)—पूरा करना (प्रा ४।१६९)।

अग्घोड (पृ)—पूर्ण करना।

अच्चुक्क (वि + ज्ञापय्)—विज्ञापन करना।

अच्छ (कृष्)—खींचना।

अच्छ (आस्)—बैठना, ठहरना (उशाटी प १४७)।

अच्छिज्ज—आच्छादन करना (से १४।७)।

अच्छुर—बिछाना—'संथारयं अच्छुरंति' (ओटी प ८३)।

अट्ट (क्वथ्)—उबालना, पकाना (प्रा ४।११९)।

अट्ट (शुष्)—सूखना—'अट्टंति णहअले च्चिअ मारुअभिण्णलहुआ सलिलकल्लोला' (से ५।६१)।

अड—वंदना करना (आवचू १ पृ २७१)।

अडक्खम्म—देखभाल करना—'अडक्खम्मिज्जंति सवरिआहि वणे' (दे १।४१ वृ)।

अडुक्ख (क्षिप्)—फेंकना (प्रा ४।१४३)।

अडुव—गिरवी रखना।

अड्ड—रोकना (आवहाटी २ पृ ८७)।

अणच्छ (कृष्)—खेती करना (प्रा ४।१८७)।

अणुचिट्ठ (अनु + स्था)—१ स्थिर रहना, टिकना—'सामण्णमणुचिट्ठइ' (द ५।१३०)। २ अनुष्ठान करना। ३ करना।

अणुवज्ज—सेवा-शुश्रूषा करना (दे १।४१ वृ)।

अणुवज्ज (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुसंभर (अनु+स्मृ)—याद करना।
अण्ण (भुज्)—खाना।
अण्ह (भुज्)—१ भोजन करना। २ पालन करना। ३ ग्रहण करना (प्रा ४।११०)।
अतुयाल—मिश्रित करना (आवमटी प ४५२)।
अद्धुम (पृ)—पूर्ण करना, भरना।
अप्पाह(अधि+आपय्)—पढ़ाना, सिखाना (से १०।७४)।
अप्पाह (आ+भाष्)—संभाषण करना।
अप्पाह (सं+दिश्)—संदेश देना (व्यभा ७ टी प ७६)।
अप्फड—आहत होना–'पाएण वा खाणुए अप्फडइ' (निचू ३ पृ १२२)।
अप्फुंव (आ+क्रम्)—१ जाना (से ६।५७)। २ आक्रमण करना।
अप्फोड—१ ताली बजाना (कु पृ १३२)। २ ताड़न करना।
अब्बुत्त (प्र+दीप्)—जलना।
अब्भड—पीछे जाना।
अब्भिड (सं+गम्)—संगति करना (प्रा ४।१६४)।
अब्भुत्त (स्ना)—स्नान करना (प्रा ४।१४)।
अब्भुत्त (उत्+क्षिप्)—फेंकना।
अब्भुत्त (प्र+दीप्)—१ प्रकाशित होना। २ उत्तेजित होना। (प्रा ४।१५२)।
अम्माहि—काटना, पकड़ना, पीछा करना–'न मे सो सप्पो अम्माहिती' (व्यभा ४।१ टी प १३)।
अयंछ (कृष्)—१ खेती करना। २ खींचना। ३ रेखा करना (प्रा ४।१८७)।
अलिल्ल (कथय्)—कहना।
अल्ल—चिल्लाना।
अल्ल (नम्)—नीचे झुकना।
अल्लत्थ (उत्+क्षिप्)—ऊंचा फेंकना (प्रा ४।१४४)।
अल्लव—समर्पण करना।
अल्लि (आ+ली)—१ आना। २ प्रवेश करना। ३ जोड़ना। ४ आश्रय करना। ५ आलिंगन करना। ६ संगत होना (प्रा ४।५४)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अल्लिय (उप+सृप्)—समीप में जाना (आवचू १ पृ २१२)।
अल्लिय (आ+ली)—आलिङ्गन करना (प्रा ४।५४)।
अल्लिव (अर्पय्)—अर्पण करना (प्रा ४।३९)।
अव—कहना।
अवअच्छ (ह्लाद्)—आनन्द पाना, खुश होना (प्रा ४।१२२)।
अवअच्छ (ह्लादय्)—खुश करना (प्रा ४।१२२)।
अवआस (दृश्)—देखना (प्रा ४।१८१)।
अवंगुण—खोलना–'दुवारवयणाइं अवंगुणंति' (भ १५।१४२)।
अवक्ख (दृश्)—देखना (प्रा ४।१८१)।
अवखेर—खिन्न करना।
अवज्जस (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।
अवज्झ (दृश्)—देखना।
अवडक्क—आत्महत्या करना।
अवडाह (उत्+क्रुश्)—ऊंचे स्वर से रुदन करना (दे १।४७वृ)।
अवपंगुण—खोलना–'णो पीहे ण यावपंगुणे' (सू १।२।३५)।
अवपंगुर—खोलना (द ५।१।१८)।
अवपुस—संयुक्त करना।
अवयक्ख (अव+ईक्ष्)—१ देखना। २ पीछे मुड़कर देखना (ओभा १८८)।
अवयच्छ (दृश्)—देखना (प्रा ४।१८१)।
अवयक्ख (अप+ईक्ष्)—अपेक्षा करना।
अवयज्झ (दृश्)—देखना (प्रा ४।१८१)।
अवयास (श्लिष्)—गले लगाना (प्रा ४।१९०)।
अवरुंड—आलिंगन करना (दे १।११ वृ)।
अववाह (अव+गाह्)—अवगाहन करना।
अवसिज्ज (अव+सद्)—हारना, पराजित होना (विभा २४८४)।
अवसेह (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।
अवसेह (नश्)—पलायन करना, भागना (प्रा ४।१७८)।
अवह (रच्)—निर्माण करना (प्रा ४।९४)।
अवहर (नश्)—पलायन करना, भागना (प्रा ४।१७८)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवहर (गम्)—गमन करना, जाना (प्रा ४।१६२)।

अवहाड—आक्रोश करना (दे १।४७वृ)।

अवहाव (कृप्)—दया करना (प्रा ४।१५१)।

अवहेड (मुच्)—छोड़ना (प्रा ४।६१)।

अवुक्क (वि+ज्ञपय्)—विज्ञप्ति करना, प्रार्थना करना (प्रा ४।३८)।

अहिऊल (दह्)—जलाना (प्रा ४।२०८)।

अहिखीर—१ पकड़ना। २ आघात करना।

अहिपच्चुअ (आ+गम्)—आना (प्रा ४।१६३)।

अहिपच्चुअ (ग्रह्)—ग्रहण करना (प्रा ४।२०९)।

अहिरेम (पूरय्)—पूरा करना (प्रा ४।१६९)।

अहिलंख (कांक्ष्)—अभिलाषा करना (प्रा ४।१९२)।

अहिलंघ (कांक्ष्)—अभिलाषा करना (प्रा ४।१९२)।

अहिलक्ख (कांक्ष्)—इच्छा करना।

आ

आअंछ (कृष्)—१ खींचना। २ जोतना, चास करना। ३ रेखा करना।

आअच्छ (कृष्)—खींचना।

आअड्ड (व्या+पृ)—व्यापृत होना (प्रा ४।८१)।

आअड्ड—परवश होकर चलना।

आअल्व (वेप्)—कांपना।

आइंच—आक्रमण करना।

आइंछ (कृष्)—खेती करना (प्रा ४।१८७)।

आइग्घ (आ+घ्रा)—सूंघना (प्रा ४।१३)।

आउंट (आ+कुञ्च्)—संकोचना।

आउट्ट (आ+वृत्)—१ करना, व्यवस्था करना (उशाटी प ३२९)। २ भूलना। ३ तत्पर होना। ४ निवृत्त होना। ५ घूमना।

आउड (लिख्)—लिखना (जंबूटी प २५०)।

आउड (आ+जोडय्)—संबंध करना।

आउडाव—घुसेड़ना (विपा १।६।२३)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आउड्ड (मस्ज्)—डूबना, मज्जन करना (प्रा ४।१०१)।
आऊड—जुए में शर्त लगाना (दे १।६६ वृ)।
आओड (आ+खोटय्)—प्रवेश कराना।
आओडाव—प्रवेश कराना—'आओडावेइ त्ति आखोटयति प्रवेशयति'
(विपाटी प ७२)।
आखंच (आ+कृष्)—पीछे खींचना।
आगंप (आ+कम्पय्)—कंपाना, हिलाना।
आघव (आ+ख्या)—१ निरूपण करना (नन्दी ८१)। २ ग्रहण करना।
आघुम्म—डोलना, हिलना, कांपना।
आचिक्ख—कथन करना (अंवि पृ ८३)।
आजत्थ (आ+गम्)—आना।
आडुआल—मिश्रण करना (दे १।६६ वृ)।
आडोह्—भीतर घुसकर गड़बड़ी करना।
आढप्प (आ+रभ्)—शुरू करना (प्रा ४।२५४)।
आढव (आ+रभ्)—आरम्भ करना (निचू १ पृ ६)।
आढा (आ+दृ)—आदर करना (विपा १।६।१४)।
आणक्ख (परि+ईक्ष्)—परीक्षा करना (निभा ४२५३)।
आणच्छ (कृष्)—खींचना।
आयंब (वेप्)—कांपना (प्रा ४।१४७)।
आयज्झ (वेप्)—कांपना (प्रा ४।१४७)।
आयड्ड—परवश होकर चलना (दे १।६६ वृ)।
आरड—१ चिल्लाना। २ रोना।
आराअ—१ ग्रहण करना। २ प्राप्त करना।
आरुण्ण (आ+श्लिष्)—आलिंगन करना।
आरेअ—पुलकित होना।
आरोअ (उत्+लस्)—खुश होना (प्रा ४।२०२)।
आरोक्क—रोकना।
आरोग्ग—भोजन करना (दे १।६६ वृ)।
आरोड—आक्रमण करना।
आरोड (नि+रुध्)—रोकना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org